यौन संचारित रोग (STD's)हेतु डाक्टर टी' का मार्ग निर्देश

सुजाक तथा क्लेमैडिया (GONORRHEA & CHLAMYDIA)

- यह रोग जीवाणुओं के द्वारा होता है। संक्रमित व्यक्ति के साथ संभोग करने के कुछ सप्ताह बाद ही इस रोग का संक्रमण शुरू हो जाता है।
- पुरूषों में इस रोग के कारण शिश्न के मुख से एक द्रव (अवसाद) का निकलना शुरू हो जाता है। इसके कारण मूत्र उत्सर्जन करने में बाधा आ सकती है। इसके लक्षण शायद बहुत ही जर्बदस्त या फिर हल्के हो सकते हैं और मुश्किल से ही इनका पता चल पाता है।
- औरतों में इसके लक्षण बहुत ही कम या बिल्कुल ही नहीं होते हैं, पर अगर इनका इलाज नहीं हो पाता है तो इसके कारण अधिक ही गंभीर बीमारी (पी॰ आइ॰ डी॰) हो सकती है और इसके कारण वह भविष्य में बच्चों को जन्म देने में सफल नहीं हो पाएगी।
- अगर इन रोगों का शुरू में ही इलाज किया जाए तो इनका प्रति जैविकी (antibiotics)द्वारा इलाज किया जा सकता है।

परिसृप (HERPES)

- परिसृप यह एक वाइरस (जर्म विषाणुओं) के कारण होता है जिसका उपचार तो किया जा सकता है पर पूरी तरह से इसका इलाज नहीं है।
- जिस पुरूष में इस रोग के लक्षण होते हैं उनके साथ संभोग करने के 3 से लेकर 10 दिनों के भीतर इस रोग के लक्षण प्रकट हो सकते है।
- परिसृप के घाव में फफोले आने शुरू हो जाते है फिर उनमे छोटी–छोटी दरारें आ जाती है और फिर उन पर पपड़ी बैठ जाती है।
- 5 से 15 दिनों के अन्दर वे ठीक हो जाते है और फिर गायब भी हो जाते हैं।
- अगर विषाणु आपके शरीर में रह जाता है तो भविष्य में आपके शरीर में घाव भी हो सकते है और कभी–कभी तो यह बार–बार भी हो सकता है।
- औरतों को पता नहीं चल पाता है कि उनमें परिसृप पैदा हो गया है क्योंकि उसके घाव योनि के अन्दर हो सकते है।

स्वयं की रक्षा करे – **कंडोम के प्रयोग को ध्यान में रखें।**

जन्नेद्रिय मस्सा (GENITAL WARTS)

- एक विषाणु से यह रोग पैदा होता है (मानव अकुंरित जीवाणु या एच॰ पी॰ वी॰ कहते है)।
- संक्रमित व्यक्ति के साथ संभोग करने के एक महीने से लेकर एक साल तक की अवधि के बीच में उठे हुए पिण्ड या धूमड़े की तरह प्रकट हो जाता है।
- अक्सर इसे औरतों में नहीं देखा जा सकता है क्योंकि वे योनि के अन्दर होते हैं। पुरूषों में तो ये इतने छोटे आकार के हो सकते हैं कि उन्हें आसानी से देखा नहीं जा सकता । मस्से की जाँच के लिए सिरके की लेप का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- औरतों में तो यह और भी गंभीर रूप धारण कर सकता है क्योंकि वे गर्भाशय के कैंसर का रूप ले सकते है।
- इनका इलाज संभव हैं। औरतों महिलाओ को पीएपी के लेप का प्रयोग नए साथी के साथ संभोग करने के बाद करना चाहिए।

उपदंश (SYPHILS)

- यह एक जीवाणु के कारण पैदा होता है। संक्रमित व्यक्ति के साथ संभोग करने के 3 सप्ताह से लेकर 3 महीने तक की अवधि के बीच घाव उत्पन्न हो जाते हैं।

- घाव त्वचा के अन्दर गड्डे के समान दिखते हैं जिनके किनारे पर उठा हुआ होता है। ये अक्सर दर्द विहिन होते हैं।
- कुछ सप्ताहों के बाद घाव तो गायब हो जाते हैं लेकिन रोग के कीटीणु रह जाते है और रोग पूरे शरीर में ददोरे की तरह निकल जाता है।
- यह ददोरा तो गायब हो जाता है लेकिन कई सालों के बाद भी जीवाणु शरीर के अन्य भागों पर आक्रमण कर सकते हैं।
- उपदंश का पेनीसीलेन द्वारा रोग के किसी भी स्तर पर इलाज किया जा सकता है।
- औरतों में योनि के भीतर ये घाव हो सकता है।

योनि संचारित रोगों को रोका जा सकता है।

रोम (बाल) जूँ (कांटे) (PUBIC LICE)

- बहुत ही सूक्ष्म 1/8 इंच श्वेत या भूरे रंग के जूँ जो कि रोम के अंदर रहते है औ जिसके कारण खुजली पैदा होती है।
- एक तरल औषधि के द्वारा इसका इलाज आसानी से किया जाता है जिसे जघन रोमों पर सीधे डाल दिया जाता है।

पामा (SCABIES)

- जघन जूँ के जैसा होता है लेकिन ये जूँ इतने सूक्ष्म होते है कि वे दिखाई तक नहीं देते तथा त्वचा के नीचे बैठे होते हैं।
- इसके कारण पूरे शरीर में खुजली पैदा करने वाले छोटे–छोटे घाव हो जाते है।
- एक तरल औषधि के द्वारा इसका इलाज किया जाता है जिसे कि पूरे शरीर पर लगाया जाता है।
- कपड़ों,चादरों तथा तौलियों को उपचार के बाद निश्चित रूप से साफ कर देना चाहिए क्योंकि कीड़े उसमें छुपे रह सकते हैं।

योनिशोथ (VAGINITIS)

- योनि का संक्रमण जिसके कारण योनि से द्रव निकलता है। इसमे कभी–कभी गंध होती है और जो जलन पैदा करती है।
- कई कीटाणुओं द्वारा यह होता है यथा सुजाक, क्लैमेडिया या खमीर आदि। यह अन्य कीटाणुओं यथा त्वचा के रोग या विषाणु के द्वारा होता है जो कि योनि के अंदर सामान्य तौर पर होते हैं।
- सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा स्त्राव का परीक्षण करने पर इसका पता किया जा सकता है।
- उचित औषधि के द्वारा इसका इलाज करने में आसानी होती है जो कि इस बात पर निर्भर करता है कि किस रोगाणु के द्वारा यह रोग हुआ है।

खमीर संक्रमण (YEAST INFECTION)

- फफूंद के जीवाणुओं के द्वारा यह होता है।
- इसके कारण बेसुनत पुरूषों के शिश्नाग्रच्छद में खुजली करते करते लाल रंग निकल जाता है।
- महिलाओं में इसके कारण खुजलाहट पैदा करने वाली उत्सर्जी पदार्थ निकलता है।
- कवक रोधी क्रीम या गोली द्वारा इसका इलाज आसानी से किया जा सकता है।

हैपिटाइटिस (HEPATITIS)

- एक खतरनाक वाइरस जो कि यकृत को प्रभावित करता है।
- इसके कारण बुखार, पेट–दर्द, थकान, आँखों तथा त्वचा का पीलापन मूत्र का रंग गाढ़ा हो सकता है।
- आराम करने से इसका उपचार होता है। इससे संक्रमित होने से बचने के लिए एक टीका है।

AIDS/एड्स (एक्वार्ड इम्यून डेफीसेन्सी सिन्ड्रफीसिंएसी) /HIV

- HIV वाइरस सबसे खतरनाक **यौन संचारित रोग** है। यह शरीर के उस भाग को कमजोर कर देता है जो कि रोगों से लड़ता है तथा प्रतिरक्षी तंत्र को सही ढ़ग से काम नहीं करने देता है।
- संक्रमण के पहले के सालों में इसके लक्षण नहीं दिखते है इसीलिए यह कहना तब तक कठिन होता है कि आपके जीवन साथी को एड्स रोग है जब तक उसकी HIV रक्त जाँच नहीं की जाती है।
- संक्रमण के दस साल बाद इसके कारण मृत्यु हो सकती है लेकिन अब हमारे पास इसके बहुत ही इलाज उपलब्ध है।

  एड्स एक निरोधक बीमारी है। यह योनि तथा सूईयों तथा सीरींज का साझीं उपयोग करने से होता है।

इस सूचना का उद्देश्य आपको यौन संचारित कई सामान्य बीमारियों को जानने में मदद करना है।

यौनि संचारित रोग यह याद रखें कि इन रोगों को रोका जा सकता है। अगर आप किसी और के साथ हम बिस्तर नहीं होतें हैं तो आपको यौन संचारित रोग नहीं होगें।

अगर हम यौन संबंध बनाते है तो सुरक्षित यौन नियमों का पालन करने जितनी बार आप किसी तरह का यौन संबध बनाते है तो हर समय आप कंडोम का प्रयोग करे।

अंधिकांश यौन संचारित रोग मुँह द्वारा या गुदा तथा जनभागों के संभोग के जरिए होता हैं।

जिनके साथ आप संभोग करते है उनकी संख्या सीमित रखे।

अपने आपको नियंत्रित रखें। इस बात का ध्यान रखें कि शराब तथा मघ पान आपके से गलत हरकत करवा सकते हैं।

निरोध के बारे मे अपने जीवन संगी के साथ बात चीत करें।

अपने जीवन संगी तथा अपनी जाँच करवाए। अगर आप अपने शरीर में या अपने जीवन संगी के शरीर में किसी तरह का घाव अवशिष्ट पदार्थ देखे तो जितनी जल्दी हो सके डाक्टर या प्रबंधक चिकित्सा से मिले या फोन करें।

यौन संचारित रोग का संम्पूर्ण चित्रसहित मार्ग निर्देशिका को देखने के लिए आप स्वास्थ्य जागरूकता संयोजन के बेबसाइट पर जा सकते है।

राबर्ट टेलर द्वारा तैयार
राबर्ट टेलर एम॰ डी॰
1755 बीकोन स्ट्रीट
बरूक्लाइन ,एम ए 02445
www. Roberttaylormd. Com
copyright 1988